आदिवासियों के हाथों में सूक्ष्मदर्शी

जानकी लेनिन

पिछले 13 वर्षों से बोलीविया की एरिका कुएलर आदिवासियों के सशक्तीकरण का काम कर रही हैं। वे उनमें अनुसंधान के हुनर विकसित करने और उनके अनुसंधान को आर्थिक दृष्टि से लाभदायक बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं। कुएलर एक जीव वैज्ञानिक हैं और हाल ही में वे रोलेक्स उद्यमिता पुरस्कार ग्रहण करने दिल्ली आई थीं। जानकी लेनिन ने उनसे मुलाकात के बाद यह आलेख लिखा है।

दुनिया भर में वनवासी लोग, जो प्रायः आदिवासी होते हैं, शोधकर्ताओं, वनकर्मियों, और संरक्षणविदों के काम में मदद करते हैं। भारत पर नज़र डालें तो केरल में कादर, तमिलनाडु में इरुला, अंडमान द्वीपसमूह में केरन, अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में निशी ऐसे भूभागों में विचरते हैं जो एक बाहरी व्यक्ति को लगभग एक जैसे ही लगते हैं। वनवासी लोग न सिर्फ वन्य जीवों के आवासों को बेहतर ढंग से जानते हैं, बल्कि वे कैम्प लगाने, भोजन पकाने और उपकरण तथा रसद को ढोने में भी मदद करते हैं। आम तौर पर अपनी बेहतर संवेदनाओं के चलते वे बाहरी लोगों को खतरों से सुरक्षित रखने में भी मददगार होते हैं।

एरिका कुएलर

इस तरह के सारे योगदान के लिए इन मैदानी सहायकों के नाम शायद अध्ययन रिपोर्ट्स और वैज्ञानिक प्रकाशनों के आभार वाले खंड में जगह पाते हों। उनकी विशेषज्ञता को शायद ही कभी आधिकारिक मान्यता मिलती है। दरअसल, अपनी इस उम्दा विशेषज्ञता के चलते वे स्वयं भी शोध कर सकते हैं। मगर औपचारिक शिक्षा का अभाव उन्हें आगे नहीं बढ़ने देता।

बोलीविया की जीव वैज्ञानिक एरिका कुएलर ने वह कर दिखाया है, अन्य लोग जिसकी बातें ही करते हैं: बमुश्किल साक्षर देशज समुदायों को अनुसंधान में सशक्त बनाना। अभी हाल ही में उन्हें रोलेक्स उद्यमिता पुरस्कार प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें अपने काम को विस्तार देने में मददगार होगा।

यह 41-वर्षीय जीव वैज्ञानिक पिछले 13 वर्षों से अपने ही देश में का-इया राष्ट्रीय उद्यान में गुआरानी, चिकितानो और आयोरिओड समुदायों के साथ काम कर रही हैं। का-इया 34,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला एक विशाल राष्ट्रीय उद्यान है। यह लगभग केरल के बराबर है। इस उद्यान में ग्रान चाको का कुछ हिस्सा संरक्षित है। ग्रान चाको एक कटिबंधीय शुष्क वन है जिसमें बीच-बीच में

दलदल, नमक के मैदान, झाड़-झंखाड़ और घास के मैदान हैं। यह महाद्वीप के सबसे गर्म स्थानों में से एक है और पूरा इलाका काफी उबड़-खाबड़ है, घूमना-फिरना आसान नहीं होता है।

वैसे कुएलर के काम का मुख्य फोकस गुआनाको था। गुआनाको पालतू बना लिए गए लामा का वन्य पूर्वज है। मगर उन्होंने अनुसंधान व संरक्षण की एक नवीन शैली गढ़ी है जिसमें पैरा-जीव वैज्ञानिक प्रशिक्षित करना शामिल है।

कुएलर ने यह अवधारणा कोस्टा रिका से अपनाकर विकसित की है। 1991 में पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के डेनियल जैंज़ेन ने देखा कि ऐसे अनगिनत कीट हैं जिनकी पहचान ही नहीं हुई है। इस काम की विशालता को देखते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि स्थानीय लोगों को कीट वर्गीकरण का प्रशिक्षण दिया जाए। यानी उन्हें पैरा-टेक्सॉनॉमिस्ट बनाया जाए। टेक्सॉनॉमी जीव विज्ञान की वह शाखा है, जिसमें सजीवों का उनके गुणधर्मों के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। मगर एरिका एक छोटे-से विषय का प्रशिक्षण देकर खुश नहीं थीं। उन्होंने मुझे बताया, ''देशज लोगों को सीखना चाहिए कि जंतुओं और वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों, विभिन्न समूहों का अध्ययन कैसे किया जाता है। उन्हें प्रबंधन के हुनर भी सीखना चाहिए, और यह भी सीखना चाहिए कि संप्रेषण कैसे करें। ये वे चीज़ें हैं जो निर्णय करने की प्रक्रिया में काफी महत्त्व रखती हैं। थोड़ा-थोड़ा हर चीज़ के बारे में मालूम होने से उनका आत्म विश्वास बढ़ेगा।''

2007 में व्हिटले फंड फॉर नेचर के एक अवार्ड के तहत एरिका ने ग्रान चाको के तीन समुदायों को इकॉलॉजी के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित करने हेतु एक पाठ्यक्रम तैयार किया। इस कोर्स का निरीक्षण जिस विश्वविद्यालय ने किया था, उसने वैकल्पिक उत्तरों पर आधारित प्रश्नों के ज़रिए परीक्षा ली क्योंकि ये छात्र विस्तृत उत्तर नहीं लिख सकते थे। सीखने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि 120 लोगों ने आवेदन किया। इनमें से सिर्फ 20 का चयन किया गया। एरिका बताती हैं, ''वे लोग पढ़ नहीं पाते थे। लिहाज़ा अध्ययन काफी मुश्किल था मगर उन्होंने परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अध्ययन का पूरा प्रयास किया।''

ऐसा एक आवेदक लुइस था। आयोरिओड समुदाय का लुइस पढ़-लिख नहीं सकता था। आज वह बुनियादी गणित, जीपीएस और सूक्ष्मदर्शी का इस्तेमाल, और वर्गीकरण के सिद्धांत जानता है। एरिका को मेरे चेहरे पर अविश्वास की झलक दिखाई दी, तो उन्होंने सिर हिलकर जता दिया कि वे मेरे अविश्वास को समझ सकती हैं। फिर उन्होंने बताया कि शुरू में तो उन्होंने लुइस को कोर्स में शामिल करने से ही इन्कार कर दिया था। मगर वह अड़ा रहा और अंततः एरिका को राज़ी होना ही पड़ा।

लुइस पूरे आठ महीने तक कक्षाओं में उपस्थित रहा और साथ ही लिखना-पढ़ना सीखने की कोशिश भी करता रहा। मगर इसके बावजूद उसकी साक्षरता का स्तर परीक्षा में बैठने के हिसाब से नाकाफी था। स्वयं उसने एक अनूठा विचार सुझायाः उसकी पत्नी सवाल पढ़ेगी, वह उनका उत्तर बताएगा और पत्नी उस उत्तर को लिख देगी। हैरत की बात थी कि विश्वविद्यालय ने इस लीक से हटकर समाधान की मंज़ूरी दे दी। और लुइस 55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुआ। अब वह आंकड़े एकत्रित करने, उनका विश्लेषण करने और परिणामों का प्रस्तुतीकरण करने की योग्यता रखता है। यह बताते हुए एरिका काफी भावुक हो गई थी कि ''हम सबको उस पर गर्व है। मैं समझ गई कि आपको लोगों को आंकने का कोई अधिकार नहीं है। आप तो उन्हें अवसर दीजिए। मैंने आज तक सबसे महत्त्वपूर्ण काम यही किया है - उसे कोर्स में शामिल करना और प्रमाण पत्र प्रदान करना।''

का-इया राष्ट्रीय उद्यान इस मायने में तो अनोखा है ही कि यहां तमाम किस्म के वन्य जीव पाए जाते हैं, जैसे जेगुआर, आर्मेडिलो, और गुआनाको। मगर इसकी उत्पत्ति भी अनोखी है। लातिनी अमरीका में यह अपने किस्म की पहली घटना थी कि खुद देशज लोगों ने इसके संरक्षण के लिए अभियान चलाया था। 1997 में सरकार ने इस राष्ट्रीय उद्यान का निर्माण किया, तब से इस इलाके की जनजातियां ही इसका प्रबंधन कर रही हैं। प्रबंधकीय निर्णय लेने में 20 पैरा-जीव वैज्ञानिक अपने नेताओं की मदद करते हैं। पैरा-

जीव वैज्ञानिक कार्यक्रम न सिर्फ स्थानीय समुदायों के सदस्यों का सशक्तीकरण करता है, वरन उद्यान के वैज्ञानिक प्रबंधन को भी संभव बनाता है।

भारत में वन आदिवासियों की कुशलताएं शायद ही कभी अर्थ व्यवस्था में स्थान पाती हों। इसीलिए वे ह्रासोन्मुख हैं। युवा पीढ़ी को अपने माता-पिता से पारंपरिक ज्ञान सीखने का कोई प्रलोभन-प्रोत्साहन नहीं है। यदि पैरा-जीव वैज्ञानिक योजना जैसा कोई कार्यक्रम चलाकर उनमें अपने ज्ञान के प्रति गौरव का संचार नहीं किया जाएगा और उसे जीविका का आधार नहीं बनाया जाएगा, तो जल्दी ही यह ज्ञान और हुनर गुम हो जाएंगे।

रोलेक्स अवार्ड की मदद से एरिका अपने कार्यक्रम को पड़ोसी देशों अर्जेंटाइना और पेरागुए में भी फैलाना चाहती हैं। इन दोनों देशों में ग्रान चाको का काफी बड़ा हिस्सा है जिसके संरक्षण की ज़रूरत है। समस्याएं तो ढेर सारी हैं। यह सही है कि पेरागुए में कागज़ों पर तो एक राष्ट्रीय उद्यान मौजूद है, मगर फौज यहां शिकार करती है। घास के मैदानों की जगह वृक्ष और झाड़ियां ले रहे हैं। मवेशियों के कारण समस्या और भी बढ़ गई है। इसकी वजह से गुआनाको का प्राकृतवास सिकुड़ गया है। आज बोलीविया और पेरागुए में मात्र 400 गुआनाको बचे हैं। एरिका इस बात से बहुत चिंतित नहीं हैं कि उन्होंने जो काम हाथ में लिया है वह बहुत बड़ा है। अपनी भावी योजनाओं और रणनीतियों की बात करते हुए उनका आत्म विश्वास साफ नज़र आता है।

जहां लुइस ने अपनी साक्षरता सम्बंधी चुनौतियों को पार किया, वहीं एरिका की अपनी जद्दोजहद भी कम नहीं रही। एक बड़ी चुनौती यह साबित करने की थी कि वे पुरुषों की दुनिया में काम कर सकती हैं। हालांकि वे आधी गुआरानी हैं, मगर जब वे पहले-पहल का-इया पहुंचीं, तो उनकी जनजाति के लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उनकी परियोजना के तहत ज़रूरी था कि वे शिकारियों के साथ जंगल जाएं। और शिकारियों में से कई को लगता था कि महिला को साथ ले जाने से अपशगुन होगा। कुछ पुरुषों को लगता था कि एक महिला उनके साथ बराबरी से चल नहीं पाएगी। अन्य महिलाएं सशंकित थीं क्योंकि शिकार तो रात भर चलने वाला काम है, और एरिका इतने मर्दों के बीच अकेली औरत होगी। एरिका काफी मायूसी से कहती हैं, ''मेरा ख्याल था कि कम से कम महिलाएं तो मुझे समझेंगी। मगर महिलाओं ने तो मुझे पुरुषों से भी कम समझा।''

एरिका ने शिकारियों के बीच प्रदर्शित किया कि वे उनके ही बराबर सख्त हैं। यदि उन्हें 10-20 कि.मी. चलना पड़ा तो उन्होंने शिकायत नहीं की। मुश्किल ज़रूर था, ज़मीन उबड़-खाबड़ थी, पानी दुर्लभ था। मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। दो हफ्ते बाद शिकारियों ने उनकी मौजूदगी को स्वीकार कर लिया।

जब एरिका सांटा क्रुज़, बोलीविया में अपने बचपन के बारे में बताती हैं तो तीन बातें स्पष्ट उभरती हैः उनकी दृढ़ता, संकल्प और उदारता। उनके पिता ने उनसे कह दिया था, ''तुम जब तक पढ़ाई कर रही हो, तुम्हें काम करने की ज़रूरत नहीं है।'' वे बताती हैं, ''सारी आर्थिक तंगी के बावजूद मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं कि मैं पढ़ सकी।''

एरिका हमेशा से जन सेवा करना चाहती थीं ताकि लोगों को खुश रहने में मदद कर सके। और पैरा-जीव वैज्ञानिक कार्यक्रम उनका अपना तरीका है कि उन लोगों को अध्ययन का मौका दे सकें, जो इससे वंचित रहे हैं।

एरिका बताती हैं कि वे अपने पिता की इस सलाह पर चलती हैं, ''मुझे परवाह नहीं कि तुम बिल्डर बनती हो, या रसोइया या लांड्री का काम करती हो, मगर जो भी करो अच्छे से करना।''

एरिका वे दिन याद करती हैं जब उन्हें 14 मर्दों की जमात में 40 दिन गुज़ारने पड़े थे। उन्हें चिंता थी कि क्या सब कुछ ठीक-ठाक हो जाएगा। उनके पिता ने कहा था, ''तुम वहां काम करने जा रही हो। अपना काम अच्छे से करना और वे तुम्हारा सम्मान करेंगे। और हो सकता है...वे तुम्हारी मदद भी करें।'' और उन्होंने की। ***(स्रोत फीचर्स)***